अपराध नियंत्रण की जगह सट्टा व्यापार में डीसीपी कपूर की अधिक रुचि

फ़रीदाबाद (म.मो.) शहरवासियों से आये दिन सट्टा सम्बन्धित शिकायतों को देखते हुये, बीते सप्ताह इस संवाददाता ने पांच नम्बर स्थित डीसीपी कार्यालय के बाहर निगरानी शुरू की। प्रात: 10 बजे से दोपहर डेढ बजे तक पाया कि डीसीपी बिक्रम कपूर से मिलने वाले आम लोग़ों में से करीब आठ सट्टा चलाने वाले तथा छ: शराब का धंधा करने वाले भी थे। कुल चार दिन चले इस निगरानी अभियान में 'मज़दूर मोर्चा' ने पाया कि 36 सट्टा चलाने वाले तथा 18 अवैध रूप से शराब बेचने वाले डीसीपी कपूर से मिलने आये।

इनमें से कुछ ने अपने धंधों का हवाला देते हुये नाम न छापने की शर्त पर बताया कि हर सट्टेबाज़, अपने काम के अनुसार 15-25 हज़ार रुपये मंथली कपूर साहब को देने सीधे उनके दफ़्तर में आता है और वे खुद अपने हाथ से लेकर अपनी दराज में रख लेते हैं। यानी कि वे इतने बेखौफ़ हैं कि उन्हें किसी विजिलेंस रेट का डर भी नहीं लगता। डीसीपी की मंथली के अलावा हर आदमी उनके व एसीपी के रीडर को पांच-पांच हज़ार रुपये चाय वाले के नाम के भी देकर जाता है।

इसके अलावा थानों के एसएचओ व चौकी इंचार्जों को भी मंथली देनी होती है। सीआईए स्टाफ़ के लोग भी आते-जाते अपना चुग्गा-पानी व कई बार मोटी मार भी मार जाते हैं। इन पेमेंटों के अलावा इस धंधे को चलाने वाले हर हफ़्ते एक-दो केस भी पुलिस को देते हैं। जिन्हें मुकदमा दर्ज करके पुलिस जमानत पर छोड़ देती है और अदालत से छोटा-मोटा जुर्माना हो जाता है। पकड़े गये लोग़ों का रेकॉर्ड खंगालने पर पता चला कि साल भर में वही लोग बार-बार पकड़े व छोड़े जाते रहे।

थोड़ी और बात-चीत बढ़ाने पर एक सट्टेबाज ने बताया कि पहले यह 15-25 हज़ार की मंथली केवल एसएचओ की तथा इसकी आधी चौकी इंचार्ज की हुआ करती थी लेकिन जब से कपूर साहब आये हैं तब से इनकी मंथली अलग से बढ़ गई है। इतना ही नहीं ये साहब चार महीने की एडवांस मंथली की मांग कर रहे हैं। एक धंधेबाज ने कहा कि यदि आपका तबादला हो गया तो हमारी एडवांस मंथली का क्या होगा? इस पर कपूर साहब ने तपाक से कहा कि मैं यहां कोई मुफ़्त में थोड़े ही बैठा हूं; मेरी सेटिंग ऊपर तक ....चंडीगढ तक बनी हुई है। फ़िर स्वत: कहा कि यहां विधायक सीमा त्रिखा व ऊपर खट्टर साहब बैठे हैं तो डरने की क्या बात है।

हमारी बात-चीत चल ही रही थी कि दो अन्य इन्हीं धंधों के आदमी भी वहां बात-चीत करते एक तरफ़ आ कर खड़े हो गये। उनमें से एक दूसरे को कह रहा था कि उसने जब डीसीपी से कहा कि वह 25000 तो पहले से ही एसएचओ को दे रहा है और अब आप को भी 25000 तथा वह भी चार महीने का एडवांस कैसे दे पायेगा? इस पर डीसीपी ने कहा कि उसे किसी एसएचओ, चौकी इंचार्ज व सीआईए को मंथली देने की जरूरत नहीं, केवल चुग्गा-पानी (1000-2000) ही देना है। यदि कोई आकर तंग करे या काम को रोके तो वह तुरंत उसे फ़ोन करे। डीसीपी के इस आश्वासन के भरोसे उसने अपने एसएचओ की मंथली बंद कर दी तो एसएचओ ने उसका काम बंद करा दिया तथा उसका सारा सामान उठाकर ले गया। अब बड़ी मुसीबत है कि एसएचओ काम चलने नहीं दे रहा और डीसीपी की वह सुनता नहीं, क्या करें कुछ समझ में नहीं आ रहा।

बात-चीत कर रहे उक्त दोनों लोग़ों से इस संवाददाता ने और जानकारी लेनी चाही तो वे झेंप गये और वहां से सटक गये। लेकिन एक अन्य धंधेबाज़ से बात करने पर पता चला कि जो सट्टेबाज़ मंथली देने में असमर्थ है यानी उसका काम कुछ हल्का है तो उस के लिये डीसीपी ने काम बढ़ाने के साथ-साथ शराब का धंधा भी शुरू करने की सलाह दी। उसे डीसीपी का पूरा संरक्षण उपलब्ध रहेगा उसे कोई पुलिसवाला तंग नहीं करेगा।

जब इलाके का डीसीपी नंगा होकर झोली पसारे बैठा हो तो सिपाहियों व थानेदारों से कोई क्या उम्मीद कर सकता है?

डीसीपी के इस लालच के चलते, इनके क्षेत्र में जहां पहले आठ दस सट्टेबाज़ व अवैध शराब बिक्रेता होते थे अब कम से कम 50 का आंकड़ा पार कर चुके हैं। गली-गली में बैठे इन सट्टेबाज़ों की गिनती करना भी अब तो मुश्किल हो गया है। इसके परिणामस्वरूप स्कूली बच्चे तक सट्टेबाज़ी का शिकार बनते जा रहे हैं।

पानी पर 1500 रुपये प्रति टैंकर पुलिस खर्चा, मामा ने लगाया ब्रेक

फ़रीदाबाद (म.मो.) मई के प्रथम सप्ताह में एसीपी ओल्ड फ़रीदाबाद आदर्शदीप सिंह के रीडर मोनू सिंह के द्वारा नहर पार के इलाके में घूम-घूम कर खेतों में चल रहे ट्यूबवैलों का ब्योरा एकत्र करने की सूचना मिली थी। पूछ-ताछ करने पर पता चला कि एसीपी का रीडर यह हिसाब लगा रहा था कि उनके क्षेत्र में कुल कितने ट्यूबवैल (बोर) हैं और उनसे औसतन कितने टैंकर पानी लेकर निकलते हैं। एक खेत वाले पर रौब जमाते हुए रीडर ने कहा कि उसका यह बोर अवैध है इसलिये उसके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की जायेगी। खेत मालिक ने अपना पूरा बही खाता उसे दिखा दिया कि उसका बोर तो पचासों साल पुराना है और तब से ही वह बिजली बिल भरता आ रहा है। सूत्रों के मुताबिक ऐसे ही जवाब जब अन्य खेत मालिकों ने भी सुना दिये तो कुछ दिन सोच-विचार कर रीडर ने उन्हें कहा कि ठीक है अपने बोर से खेतों की सिंचाई करते रहो, लेकिन टैंकरों द्वारा पानी बेचोगे नहीं।

अब इस पर बोर मालिक अटक गये, क्योंकि सिंचाई के लिये तो कोई बहुत ज़्यादा पानी तो चलता नहीं, असल खपत तो टैंकरों द्वारा की जाती है। सारी कवायद का परिणाम यह निकला कि बोर मालिकान पर रीडर ने 1500 रुपये प्रति टैंकर पुलिस फ़टीक के नाम पर डाल दिया। वह टैंकर वाले से कितना वसूलेगा, वह जाने। प्रत्येक बोर मालिक रोज़ाना कम से कम पांच टैंकरों के 7500 रुपये जमा करायेगा। थाना खेड़ी पुल इलाके में इस तरह के छ: बोरों का अभी तक पता चल पाया है। वसूली का जिम्मा एसएचओ खेड़ी पुल के जिम्मे लगाया गया है। इसके अलावा थाना भोपानी, व बीपीटीपी में कितने बोरों पर सौदा हुआ है उसकी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास जारी है।

सर्वविदित है कि हर नागरिक को पानी उपलब्ध कराने का दायित्व सरकार का होता है। इसे निभाने के लिये शहरों में नगर निगम व गांवों में पंचायतों और पब्लिक हैल्थ विभाग द्वारा पानी की आपूर्ति की जाती है। लेकिन हरामखोरी व रिश्वतखोरी के चलते ये विभाग न तो खुद पानी की आपूर्ति करते हैं न लोग़ों को अपने खुद के बोर करने देते हैं। ऐसे में मजबूरन प्यास बुझाने के लिये नागरिकों को टैंकरों का सहारा लेना पड़ता है। टैंकर चालक टैंकर के अपने खर्चे, बोर मालिक को पानी की कीमत 200 रुपये प्रति टैंकर अदा करने के बाद सड़क पर चलने के एवज में ट्रैफ़िक पुलिस को रिश्वत देता ही था अब यह नई फ़टीक और पड़ गयी। जाहिर है यह फ़टीक भी रेट बढा कर अन्तिम उपभोक्ता से ही वसूली जायेगी। अब तक जो टैंकर उपभोक्ता को 900-1150 में पड़ता था उसमें जब 1500 और जुड़ जायेंगे तो क्या होगा, समझना कठिन नहीं। लेकिन इस पुलिसिया फ़र्मान से आतंकित लोग जब सांसद कृष्णपाल गूजर के मामा राजपाल की शरण में पहुंचे तो उन्होंने सम्बन्धित पुलिस अधिकारियों को धमकाया और कहा कि यह सब नहीं चलेगा।

स्मार्ट सिटी की ओवर स्मार्ट सीवर व्यवस्था

फ़रीदाबाद (म.मो.) करीब डेढ माह पूर्व निगमायुक्त अनीता यादव ने जलभराव को लेकर कड़े तेवर दिखाते हुए निगम अधिकारियों को, आगामी बरसात में जल भराव की स्थिति में कड़ी कार्यवाही की चेतावनी दी थी। वैसे इस तरह की कड़ी चेतावनी बीते बीसियों बरस से प्रत्येक निगमायुक्त देता आया है। इस चेतावनी के बाद करोड़ों रुपया नालों आदि की सफ़ाई पर खर्च हो जाता है; परन्तु जलभराव बरसात तो क्या बिना बरसात के भी बना रहता है। दिनांक पहली जून की प्रात: हार्डवेयर चौक वाले गोल चक्कर के चारों ओर सीवर का पानी भरा खड़ा था। उसी पानी ने हार्डवेयर से बीके चौक जाने वाली सड़क के करीब 100 फ़ीट हिस्से को कई बार उखाड़ दिया।

शहर के सबसे पॉश कहे जाने वाले 14 व 15 सेक्टर में भी सीवर जाम की वजह से जल भराव होता है। सेक्टर 15 की ओर से सेक्टर 14 में प्रवेश करने वाले गेट पर सदैव जल भराव रहता है। कुछ तो यहां सड़क की बनावट एवं लेवलिंग ऐसी है कि यहां से बह कर पानी कहीं जा नहीं सकता। दूसरे यहीं पर स्थित एक मैनहोल से सदैव सीवेज बहता रहता है। इस सीवेज को खलाने के लिये हर तीसरे दिन ट्रैक्टर सक्कर मशीन का इस्तेमाल निवासियों को करना पड़ता है। एक बार खलाने के लिये ट्रैक्टर वाला 650 रुपये लेता है तथा सड़े हुए सीवेज को मौका पाकर आस-पास अथवा गुड़गांव नहर में उड़ेल देता है। है न स्मार्ट सिटी की स्मार्ट व्यवस्था।

एक भी रेन हार्वेस्टर तो खट्टर से बना नहीं, कुछ रीचार्ज हो रहा था उसे भी रोकने पर उतारू

फ़रीदाबाद (म.मो.) करीब 9-10 माह पूर्व मुख्यमंत्री खट्टर ने गिरते भूजल को रोकने एवं उसे बरसाती पानी से रीचार्ज करने के लिये शहर में 1000 रेन वाटर हार्वेस्टर लगाने की घोषणा की थी। लेकिन आज तक एक भी हार्वेस्टर नहीं लगा। शहर के लोग़ों ने योगेश धींगड़ा की पहल पर जो एक हार्वेस्टर लगाना शुरू कर दिया था उसे बीच में ही विधायक सीमा त्रिखा ने रूकवा दिया था।

सेक्टरों की पक्की सड़क के दोनों ओर जो 10-10 फ़ीट की कच्ची जगह छोड़ी गयी थी उसे भी पक्का करने का काम जोरों पर है। दोनों ओर की इस कच्ची जगह को कुछ लोग़ों ने तो खुद ही पक्का कर लिया था लेकिन कुछ लोग़ों ने उसमें पेड़-पौधे आदि लगा कर बचा रखा था, इससे कुछ न कुछ बरसाती पानी ज़मीन में उतरता था। परन्तु स्मार्ट सिटी के नाम पर मिलने वाले पैसे से शहर को कैसे खराब किया जाय, नगर निगम अधिकारियों से बेहतर कौन जान सकता है।

वैसे आजकल ऐसी टाइलें बाज़ार में खूब प्रचलित हैं जिनके बीच बने बड़े-बड़े छेदों में से घास भी उगता व पनपता है और पानी भी धरती में समाता रहता है। परन्तु जिन नेताओं व अधिकारियों का जनता व पर्यावरण से ही दुश्मनी हो वे भला ऐसी आधुनिक टाइलें क्यों लगाने लगे? वे तो पहले जम कर रोड़ी की कुटाई करायेंगे फ़िर उसके ऊपर टाइलों को ऐसे जमायेंगे कि पानी की कोई बूंद धरती में न समा सके। इसी को कहते हैं अपना जूता अपने ही सिर पर मारना।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5
2. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
4. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे
5. राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने
6. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास
7. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207